54

हमारे जीतने के पांच कारण!

(17:14-18)

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का थीम या विषय *विजय* है यानी यदि हम परमेश्वर के साथ बने रहें तो जीत हमारी ही होगी! कइयों का मानना है कि इसे और बढ़िया ढंग से व्यक्त करने वाली आयत 17:14 है: ''ये मेमने से लड़ेंगे, और मेमना उन पर जय पाएगा; क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु, और राजाओं का राजा है:[1] और जो बुलाए हुए, और चुने हुए, और विश्वासी उसके साथ हैं, वे भी जय पाएंगे।'' यूनानी शब्द का अनुवाद ''जय'' ''विजय'' के लिए *nike* का क्रियारूप है।

यह विजय कोई छोटी-मोटी जीत नहीं है। मसीहियत के शत्रुओं का स्पष्ट, बल्कि परेशान करने वाला विवरण दिया गया है। अध्याय 12 में अजगर का परिचय दिया गया, जबकि अध्याय 13 में उसके दो साथियों अर्थात दो पशुओं के बारे में बताया गया। अजगर के तासरे साथी यानी बाबुल अर्थात बड़ी वेश्या को, जो उस समय में रोम नगर था, अध्याय 17 में बड़े ही शानदार रंगों में दिखाया गया है।

> उस काल के दौरान ... जिसमें प्रकाशितवाक्य लिखा गया था, रोम अपनी महानता के चरम पर था। उसकी सीमाएं बर्तानवी टापुओं से लेकर अफ्रीकी मरुस्थल तक और अटलांटिक महासागर से लेकर फरात तक फैली थी। ... उस समय के लोगों को लगता था कि सारा संसार रोम ही है।[2]

17:18 में बाबुल को ''बड़ा नगर जो पृथ्वी के राजाओं पर राज करता है'' के रूप में दिखाया गया है। स्वर्गदूत ने कहा कि ''वे दस राजा हैं; ... ये सब एक मन होंगे, और वे अपनी-अपनी सामर्थ और अधिकार उस पशु को देंगे। ये मेमने से लड़ेंगे'' (17:12-14क)।

जिस लड़ाई का उल्लेख हुआ है, ''वह लड़ाई'' पहले की गई चर्चा वाली लड़ाई हो सकती है,[3] परन्तु अधिक सम्भावना यही है कि यह 12:17 में बताया गया झगड़ा है,[4] जिसमें क्रोधित हुआ अजगर उनसे ''लड़ने को गया'' ''जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं।'' अन्य शब्दों मे भलाई और बुराई के बीच लगी रहने वाली लड़ाई यह वह लड़ाई है, जिसमें हम में से हर कोई लगा हुआ है।[5]

प्रभु के विरुद्ध इकट्ठी हुई शक्तियों की कल्पना करें तो आपको ''और मेमना उन पर जय पाएगा'' शब्दों की सही समझ आ जाएगी। मैं फिर से दोहराता हूं कि यह कोई मामूली जीत नहीं है!

इस विजय में कई बातें शामिल हैं, परन्तु मैं वचन में सुझाई गई पांच बातों अर्थात हमारे जीतने के पांच कारणों पर ही प्रकाश डालना चाहता हूं!

हम जीतते हैं, ज़्योंकि यीशु ने अपना लहू बहाया (17:14)

वचन के आरम्भ में कहा गया है कि ''*मेमना* उन पर जय पाएगा'' जो मुझे अध्याय 5 में मेमने के परिचय का स्मरण कराता है: ''और मैंने उस सिंहासन ... और उन प्राचीनों के बीच में, *मानो* एक वध किया हुआ मेम्ना खड़ा देखा'' (आयत 6क)। जो मुझे अध्याय 12 वाले बड़े सांप अर्थात शैतान की पराजय का दृश्य स्मरण कराता है: ''फिर ... हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला, जो रात-दिन हमारे परमेश्वर के सामने उस पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया। और वे *मेमने के लोहू के कारण,* ... उस पर जयवन्त हुए'' (आयतें 10, 11क)। अतिरिक्त कारक जो भी शामिल हों, हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि अन्ततः विजय ''मेमने के लहू के कारण'' ही हुई। एफ. डब्ल्यू. फर्रार ने लिखा है:

> ... सबका विरोध सहने वाली मसीहियत जीत गई! ... कब्र के तहखाने यूनानी मंन्दिरों पर यानी दाख के कटोरे और ... दावत ... पर क्रूस की लज्जा ने विजय पा ली । ... संसार के कामुक आदर्श और नशीले आनन्द, संसार के मोहक मिथ्या और कामुक धर्म सब क्रूस के आगे भाग गए! हां, मेरे भाइयो, क्योंकि वह क्रूस संसार के असली राजा के लहूलुहान हाथों में था, जिसने निर्बलता में अपने अनुयायियों को सामर्थ को सिद्ध किया; और ऊंचे पर उठाए जाकर, सब मनुष्यों को अपनी आरे खींचा।[6]

हम जीतते हैं, ज़्योंकि पाप स्व-विनाशकारी है (17:16)

हमारी विजय का एक और कारक आयत 16 में देखा जाता है। आयत में पहले ''दस सींग ... और पशु'' का उल्लेख है। ''दस सींग'' सम्भवतया वे राजा थे, जिनसे वेश्या ने दुष्कर्म किया था (17:2) और जिनकी निष्ठा पशु के प्रति हो गई थी (17:12, 13)।[7] राजाओं की निर्भरता पशु और वेश्या दोनों पर होने की बात पर जोर देते हुए बाबुल को पशु पर बैठे दिखाया गया है (17:3)।

फिर आयत 16 चौंकाने वाली बात देती है कि मातहत राजा और पशु अन्ततः स्त्री के विरुद्ध हो गए:[8] ''जितने वे पहले समर्पित थे, उतनी ही अविवेकी शैतानी घृणा से भर कर उस वेश्या पर टूट [पड़े], जो पहले उन्हें भाती थी ...'[9] वे ''वेश्या से घृणा करेंगे और उसे लाचार कर नंगी कर देंगे,[10] और उसका मांस[11] खा[12] जाएंगे और उसे आग में[13] जला देंगे।''[14]

घृणा पृष्ठ से ही दमकती है। राजा और पशु अपनी पूर्व प्रेमिका की हत्या करके ही संतुष्ट नहीं हुए थे। उनकी इच्छा उसे अपवित्र करने की थी। वे उसके पूर्ण विनाश से कम

किसी बात से संतुष्ट नहीं होने थे। यह जघन्य हत्याकांड था।[15]

ये शब्द अध्याय 18 की झलक हैं, जिसमें रोम नगर के विनाश का वर्णन है। आयत 1 में स्वर्गदूत ने यूहन्ना को बताया था कि वह उसे ''बड़ी वेश्या का दण्ड'' दिखाएगा। आयत 16 का उद्देश्य इस प्रेरित को यह झलक दिखाना था कि यह *कैसे* होना था, अन्ततः उसके साथियों ने उसके विरुद्ध हो जाना था।

> रोम की बड़ी कमज़ोरी अलग-अलग लोगों को एक न कर पाने की इसकी अक्षमता थी। रोम ने बल से जीत कर नियन्त्रण तो कर लिया, परन्तु इसमें वह मिलाने वाली शक्ति नहीं थी, जिससे विजय पाए हुए लोगों को समरूप राज्य में जोड़ कर रखा जा सके। यह कमज़ोरी नबूकदनेस्सर को एक स्वप्न में बताई गई थी जब उसने आने वाले चौथे बड़े साम्राज्य अर्थात रोम को ''कुछ तो दृढ़ और कुछ निर्बल ... उस राज्य के लोग ... जैसे लोहा मिट्टी के साथ मेल नहीं खाता, वैसे ही वे भी एक न बने रहेंगे'' [दानिय्येल 2:42, 43; ASV] के रूप में देखा था।[16]

पिछले पाठ में, मैंने दावा किया था कि वेश्या और पशु दोनों से राजाओं का मेल सच्चे प्रेम के कारण नहीं, बल्कि स्वार्थ से प्रेरित था। हम सबने ऐसी राजनैतिक समझौते देखे हैं। ऐसे सगंठनों की नींव कच्ची होती है, और कथित साथी आमतौर पर एक-दूसरे के गले पकड़कर खत्म होते हैं।

कई लेखक आयत 16 को अक्षरशः लेते हैं। कई इसे नीरो के लिए कहते हैं, जिस पर रोम नगर के अधिकतर भाग को जलाने का आरोप था। अन्य इसे बर्बर दलों के लिए कहते हैं, जिन्होंने 400 के दशक में नगर को उजाड़ दिया। हैनरी स्वेट ने लिखा है, ''[*रोमी साम्राज्य के*] गिरने और पतन होने का किसी पाठक को कोई भौतिक नुकसान नहीं हो सकता था, जिससे एकदम यह बात समझ आती है और संत यूहन्ना की भविष्यवाणी के सामान्य प्रवाह को सही ठहराती है।''[17] हम इस आयत को अक्षरशः लें या न, यहां यही सिखाया गया है कि अन्त में रोम के पापों ने ही उसे फंसा लेना था।[18] उसने अब उन पर निर्भर नहीं हो पाना था, जिन्हें वह अपने मित्र मानती थी।

टीकाकारों के पहाड़ में से जाने का रास्ता चुनने के कारण एक वाक्यांश मुझे लगा कि बार-बार दोहराया जा रहा है: टीकाकार बार-बार इसी बात पर ज़ोर देते हैं कि हर पाप में ''अपने ही विनाश के बीज'' होते हैं। यह नियम आयत 16 में समझाया गया है। अन्त में बुराई अपना नाश स्वयं कर लेती है। दाऊद ने लिखा था, ''... कुकर्मियों के कारण मत कुढ़, ... क्योंकि वे घास की नाईं झट-कट जाएंगे'' (भजन संहिता 37:1, 2क)। हमें यह दृष्टिकोण मिलने पर बुराई इतनी भयानक नहीं लगती।

हम जीतते हैं, क्योंकि नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है (17:17)

आयत 17 हमें विजयी होने के लिए आश्वस्त होने का एक और कारण देती है। यह आयत प्रकाशितवाक्य में सबसे विचारणीय आयतों में से एक है: ''क्योंकि परमेश्वर उनके

मन में यह डालेगा कि वे उसकी मंशा पूरी करें, और जब तक परमेश्वर के वचन[19] पूरे न हो लें, तब तक एक मन होकर अपना-अपना राज्य पशु को दें।'' पहले कहा गया था कि राजाओं का ''उद्देश्य एक ही'' था, और उन्होंने ''अपनी-अपनी सामर्थ और अधिकार उस पशु को दे दिया'' (17:13)। अब आयत 17 बताती है कि परमेश्वर ने इसे करने के लिए *''उनके मन में डाला''* ताकि *उसका* उद्देश्य पूरा हो, यानी *उसके* वचन पूरे हों! ''अनजाने में अनचाहे''[20] परमेश्वर के शत्रुओं ने जो कुछ भी किया, अन्ततः वह उसी ही उद्देश्य को पूरा करने वाला साबित हुआ।

क्या यह अजीब बात नहीं है? पशु के साथ राजाओं का समझौता मसीहियत के लिए हानिकारक लगना था परन्तु आयत 17 कहती है कि इस समझौते से पशु और राजाओं को बाबुल की ओर मुड़ने और उसका विनाश करने का मार्ग बन गया।

मुझसे यह न पूछें कि परमेश्वर ने राजाओं के मन में कैसे डाला, या परमेश्वर ने उन्हें नियन्त्रित कैसे किया। मुझे नहीं मालमू, परन्तु मैं विश्वास से मानता हूं कि उसने यह सब किया। बाइबल ऐसे उदाहरणों से भरी पड़ी है, जो उन राष्ट्रों पर भी परमेश्वर के नियन्त्रण को दिखाती है, जिसके संसाधनों का इस्तेमाल उसके विरुद्ध किया गया था। होमेर हेली ने कहा है:

> परमेश्वर से ''उसकी इच्छा पूरी करने के लिए उनके मनों में डालना'' कहना बेकार है; यह केवल उसे ही पता है। वचन स्पष्ट बताता है कि पूरे इतिहास में परमेश्वर ने अपने उद्देश्य के लिए लोगों और जातियों का इस्तेमाल किया। वह गिदोन के समय मिद्यानियों को (न्यायियों 7:22) और शाऊल के समय पलिश्तियों को लड़ाने की तरह किसी जाति को अन्दर ही अन्दर लड़वा सकता था (1 शमूएल 14:20)। सेईर के पहाड़ी देश के विरुद्ध मोआबियों और अम्मोनियों की लड़ाई में, परमेश्वर ने यहूदा की सेना के तलवार उठाए बिना यहोशापात राजा को विजय दे दी (2 इतिहास 20:23)।[21]

दानिय्येल नबी ने कहा था कि ''परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है'' (दानिय्येल 4:17)। प्रकाशितवाक्य में इसी सच्चाई पर बार-बार ज़ोर दिया गया है। परन्तु इन आयतों के अलावा जिनका हम इस समय अध्ययन कर रहे हैं और कहीं इतना स्पष्ट नहीं कहा गया!

हम जीतते हैं, ज़्योंकि यीशु सबका प्रभु है (17:14)

जो कुछ भी हमने कहा है वह सब आयत 14 के मुख्य विचार ''और मेमना उस पर जय पाएगा; *क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु, और राजाओं का राजा है"* (आयत 14ख, ग) से सम्बन्ध रखता है! अध्याय 19 में जब यीशु विजय के लिए सवारी करता है तो उसके वस्त्र पर यह नाम छपा होगा: ''**प्रभुओं का प्रभु, और राजाओं का राजा**'' (आयत 16)।[22] मसीह के शासन के विषय में नेपोलियन ने कहा था:

> आप साम्राज्यों और सत्ता की बात करते हैं। हां, सिकंदर महान, जूलियस सीज़र,

> चार्लमैगने और मैंने साम्राज्य स्थापित किए हैं, परन्तु हमने उनकी स्थापना का आधार किसे बनाया? बल को। मसीह ने अपना राज्य प्रेम पर स्थापित किया और इस समय उसके लिए करोड़ों लोग जान देने को तैयार हैं। ... मुझे कोई सेना या बैनर या किले की दीवार तोड़ने का यंत्र दिखाई नहीं देता, तौ भी एक रहस्यमय शक्ति है, जो मसीहियत के हित के लिए काम करती है। यानी यहां-वहां लोग बड़े अदृश्यमय एक सांझे विश्वास से गुप्त रूप में बने हुए हैं। मैं अपने समय से पहले मर जाऊंगा और मेरी देह कीड़ों का भोजन बनने के लिए पृथ्वी को सौंप दी जाएगी। नैपोलियन महान कहलाने वाले का भविष्य यही है। परन्तु मसीह को देखो, जो हर देश में सम्मानित और प्रिय है। उसके राज्य को देखो, जो अन्य सब राज्यों से अधिक बढ़ रहा है। उसका जीवन किसी मनुष्य के लिए नहीं था; उसकी मृत्यु भी मनुष्य जैसी नहीं, बल्कि जैसे परमेश्वर की है।[23]

पहले मैंने ज़ोर दिया था कि नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है। अब इसे बड़े-बड़े अक्षरों में लिख लें कि **नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है**।

हम जीतते हैं, क्योंकि यीशु ने हमें अपनी योजना में मिला लिया (17:14)

अब तक कही गई हर बात रोमांच भरी है, परन्तु ज़ोर इसी बात पर दिया गया है कि *प्रभु* क्यों जीतता है। हमारी अन्तिम सच्चाई सबसे चौंकाने वाली है यानी हम जीतते हैं क्योंकि प्रभु ने *हमें* अपनी महान योजना का भाग बनाया है।

यह कहने के बाद कि प्रभु जयवन्त *होगा* ''क्योंकि वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है'' वचन कहता है कि वह अकेला नहीं है।[24] इससे उसके साथियों की रूपरेखा और विशेषताएं भी मिल जाती हैं: ''और जो बुलाए हुए, और चुने हुए, और उसके साथ हैं'' (आयत 14घ)।

निश्चय ही यीशु के साथ विजय का आनन्द लेने वालों का विवरण इससे अच्छा नहीं हो सकता। इस्तेमाल किए गए शब्द इस बात पर भी ज़ोर देते हैं कि प्रभु क्या है और इस पर भी कि प्रभु ने हमारे लिए क्या किया है और हम उसे कैसे ग्रहण करें: पहले हमें पृथ्वी पर रहते हुए ''बुलाया'' जाता है। पृथ्वी पर रहते हुए यीशु ने अपने चेलों को ''मेरे पीछे हो ले'' शब्दों से बुलाया (मत्ती 4:19; 6:22; 9:9; 19:21)। आज हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाया जाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14), परन्तु चुनौती आज भी वही है: ''तब यीशु ने ... कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले'' (मत्ती 16:24)। मुझे यह जोड़ना चाहिए कि पत्री में मसीही लोगों को ''बुलाए हुए'' कहे जाने (रोमियो 1:6, 7; 1 कुरिन्थियों 1:24; यहूदा 1) से वचन का संकेत यह है कि उन्होंने परमेश्वर की बुलाहट का *जवाब दिया* है।[25]

हम ''चुने हुए'' लोग हैं (2 थिस्सलुनीकियां 2:13; 2 तीमुथियुस 2:10; तीतुस 1:1; 1 पतरस 1:1)। यह विवरणात्मक शब्द ''बुलाए हुए'' शब्द से जुड़ा है, परन्तु इसमें,

इससे भी आगे का विचार है। यीशु ने परमेश्वर का निमंत्रण ठुकराने वालों की बात करते हुए कहा, ''क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं'' (मत्ती 22:14)। ''चुने हुए'' का अर्थ परमेश्वर के निमन्त्रण का सकारात्मक जवाब देना भी है, परन्तु मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि इस शब्द का अर्थ यह है कि परमेश्वर द्वारा हमें हमारे किसी गुण या योग्यता के आधार पर नहीं, बल्कि इस आधार पर ''चुना गया'' (1 कुरिन्थियों 1:27) कि उसकी सहायता से हम क्या *बन सकते* हैं (कुलुस्सियों 3:12)।

अन्तिम शब्द ''विश्वास योग्य'' है। पहले दो शब्द परमेश्वर पर प्रकाश डालते हैं; यह शब्द हम पर प्रकाश डालता है। प्रभु ने हमें बुलाकर और हमें चुनकर हम पर भरोसा जताया है; अब हमें उसके और उसके काम के प्रति निष्ठावान रहकर अपने आप को भरोसे के योग्य दिखाना है। ''भण्डारी में यह बात देखी जाती है, कि विश्वास योग्य निकले'' (1 कुरिन्थियों 4:2 l[26] अब तक आपको प्रकाशितवाक्य 2:10 याद हो चुका होगा: ''प्राण देने तक विश्वासी है, ...''

सारांश

हम विजयी होने के लिए इतना आश्वस्त कैसे हो सकते हैं? जिन वचनों का हमने अध्ययन किया है उनमें कम से कम पांच कारण मिलते हैं: (1) क्योंकि यीशु ने हमारे लिए अपना लहू बहाया; (2) क्योंकि, अन्ततः, पाप स्व-विनाशकारी है; (3) क्योंकि पूरा नियन्त्रण परमेश्वर के पास है; (4) क्योंकि यीशु सबका प्रभु है। ये पहले चार कारण अपरिवर्तनीय हैं, जिन्हें बदला नहीं जा सकता। परन्तु पांचवां कारण, मेरे और आपके सम्बन्ध में बहुत निर्णायक है; (5) क्योंकि प्रभु ने हमें अपनी योजना में मिलाया है। इस अंतिम कारण में एक भिन्नता है; यह केवल ''बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासी'' लोगों के लिए है।

हममें से हर किसी को सुसमाचार के द्वारा बुलाया गया है, परन्तु क्या हमने विश्वास करने, मन फिराने और बपतिस्मे के द्वारा उस बुलाहट का जवाब दिया है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)? परमेश्वर हमें ''उद्धार के लिए'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:13) चुनना चाहता है, परन्तु क्या हमने उसे हमें बनाने और अपनी इच्छा के अनुसार ढालने की अनुमति दी है? परमेश्वर हर बात में वफादार है (इब्रानियों 10:23; प्रकाशितवाक्य 3:14; 19:11), परन्तु क्या हम उसके वफ़ादार रहे हैं (इफिसियों 1:1; कुलुस्सियों 1:2)? यदि आप ''बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासी'' नहीं हैं, तो अध्याय 17 का आश्वासन आपके लिए नहीं हो सकता। यदि अभी तक आपने भरोसा रखकर आज्ञा नहीं मानी है तो *अभी* मान लें।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

आयत 14 ''बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासी'' शब्दों पर विशेष बल के साथ ''मेमने के द्वारा विजय'' पर टैक्सचुअल सरमन का आधार हो सकती है। चाहें तो केवल ''बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासी'' पर ही विचार कर सकते हैं। व्यक्तिगत रूप से इन

तीनों शब्दों का इस्तेमाल परमेश्वर के लोगों के विवरण के लिए नए नियम में असंख्य बार हुआ है (किसी अनुक्रमणिका या कंकोर्डेंस में देखें)।

टिप्पणियां

[1]''प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा'' वाक्यांश अत्याधिक महत्वपूर्ण है। इस शब्दावली पर टिप्पणियों के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की आगामी पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 3'' में ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' पाठ देखें। [2]रेअ समर्स, *वर्थी इज़ द लैंब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 90. [3]इसी पुस्तक में ''युद्ध, जो न कभी था और न होगा'' पाठ देखें। [4]''लड़ाई'' के बारे में तीन वचनों में निश्चित उपपद (अंग्रेजी में ''the'') लड़ाई के लिए इस्तेमाल होगा, परन्तु 17:14 में कोई निश्चित उपपद नहीं मिलता। 17:14 के मूल वचन की शब्दावली 12:17 से मिलती-जुलती है। [5]यदि किसी को आपत्ति हो कि 17:14 कहता है कि वे मेमने के विरुद्ध लड़ाई करेंगे न कि उसके अनुयायियों के विरुद्ध, तो याद रखें कि शैतान प्रभु के चेलों पर आक्रमण करके ही उस पर हमला करता है (प्रेरितों 8:1; 9:5)। [6]जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 27-28 में उद्‌धृत एफ. डब्ल्यू. फर्रार, *हिस्ट्री 'स विटनेस टू क्राइस्ट*। [7]कइयों का मानना है कि यह आयत 2 वाले राजा नहीं है, क्योंकि अध्याय में उन राजाओं को रोम के विनाश पर रोते बताया गया है (18:9, 10)। परन्तु लोगों के लिए कोई काम करके उसे महसूस करना जिसे 2 कुरिन्थियों 7:10 में ''संसार का शोक'' कहा गया है, आम बात है। याद रखें कि ये राजा अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि मदहोशी में और अनजाने में परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे थे। [8]आयत 16 की तुलना यहेजकेल 23:1-35 में यहेजकेल के स्पष्ट रूपक से करें। मरकुस 3:23-26 भी देखें। इन वचनों को शैतान के ''अपने ही विरुद्ध बंटवारे'' के उदाहरण के रूप में सिखाया जा सकता है। [9]मार्टिन एच. फ्रैंज़मैन, *द रैवलेशन टू जॉन* (सेंट लुईस, मिज़ोरी: कॉन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1976), 119. [10]नंगी होने के अपमान के संबंध में, देखें नहूम 3:5.

[11]पुराने नियम में, मांस खाना भयंकर शत्रु का काम था (भजन संहिता 27:2; मीका 3:3)। [12]यूनानी शब्द के अनुवाद ''खा'' का अर्थ ''भूखों की तरह खाना'' है। [13]पुराने नियम में यह अत्यधिक घिनौने पापों का दण्ड था (लैव्यव्यवस्था 20:14; 21:9)। [14]इन चित्र रूपी शब्दों से भविष्यवाणी हुई कि रोम नगर का हर संसाधन छीन लिया जाएगा यानी वह भस्म हो जाएगी और उसे नष्ट कर दिया जाएगा। [15]यद्यपि इससे नगर के विनाश का वर्णन मिलता है परन्तु इन शब्दों से किसी मनुष्य के अपवित्र किए जाने का पता चलता है कि उसका भड़कीला वस्त्र उससे उतार दिया गया था; उसकी देह नोच डाली गई थी; वह आग की लपटों में जल गई थी। यह इतना खतरनाक दृश्य है कि मैंने इसे शब्दों में या ब्रायन वाट्स के चित्रों द्वारा समझाने की कोई कोशिश नहीं की। यदि आप दिए गए विवरण पर टिप्पणी करने का निर्णय लेते हैं तो इस बात पर ज़ोर दें कि भयंकर शब्दों का इस्तेमाल हमें कामुक आकर्षण में फंसने से बचने की चेतावनी है, वरन हमारा हाल भी परीक्षा में डालने वाला होगा! [16]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 355. [17]हैनरी बी. स्वेट, *द अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैंब्रिज: मैकमिलन कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 225. [18]रोम बाहर से आने वाली खतरनाक सेनाओं से पहले ही अन्दर से खत्म हो चुका है। [19]''परमेश्वर के वचन'' वाक्यांश को किसी भी प्रतिज्ञा और वचन की भविष्यवाणी में लागू किया जा सकता है, परन्तु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ''परमेश्वर के वचन'' के लिए इसकी विशेष प्रासंगिकता है। [20]फिलिप एडकम्यूब ह्यूग्स, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन: ए कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1990), 188.

[21]हेली, 356. बाइबल का एक और नाटकीय उदाहरण यशायाह 10:5-7 में मिल सकता है। [22]बाइबल

में और कहीं इसी शब्दावली का इस्तेमाल परमेश्वर के लिए हुआ है (व्यवस्थाविवरण 10:17; दानिय्येल 2:47; 1 तीमुथियुस 6:15)। यह तथ्य कि यह प्रकाशितवाक्य में यीशु पर लागू होता है, उसके परमेश्वर होने की पुष्टि करता है। [23]डेविड एफ. बर्गस, कं., *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन इलस्ट्रेशन* (सेंट लुईस: कॉन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 36 में उद्धृत। [24]विजय में हमारी भागीदारी पर पहले 12:11 में जोर दिया गया है। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''हाल ही में किसी अजगर को मारा है क्या?'' में उस आयत पर नोट देखें। लियोन मौरिस ने लिखा है कि ''*बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासी*'' लोग प्रभु के ''डिब्बे हैं न कि उसके संसाधन, वे सहायता के किसी स्वतंत्र संसाधन को नहीं दिखाते क्योंकि उसे किसी की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में दिए गए गुणों से पता चलता है कि वे उसी पर निर्भर हैं, परन्तु वे उसकी विजय में भागीदार हैं'' (*रैवलेशन,* संशो. संस्क. द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987], 206)। [25]यूनानी के अनुवादित शब्द ''कलीसिया'' का मूल अर्थ ''बुलाए हुए लोग'' है। [26]मत्ती 25:21, 23 भी देखें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. आपको क्यों लगता है कि कुछ लोगों ने 17:14 प्रकाशितवाक्य का ''विषय कथन'' बनाया है?
2. पाठ में ''हमारे जीतने के'' पांच कारण दिए गए हैं। पहला कारण क्या है? यह कारण कितना महत्वपूर्ण है?
3. पाठ में दूसरा कारण क्या दिया गया है?
4. क्या आप राजनैतिक गठबन्धन करने वालों का कोई उदाहरण दे सकते हैं, जिसमें ''साथी'' अन्त में एक-दूसरे से घृणा करने लगे हों और एक-दूसरे को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हों?
5. 17:16 वाली स्त्री के विनाश की तस्वीर को रोम नगर के विनाश पर लागू करें।
6. तीसरा कारण क्या दिया गया है?
7. विचार करने योग्य कथन कि परमेश्वर ''[राजाओं के मनों में] यह डालता है कि वे उसकी मंशा पूरी करें'' (17:17) पर चर्चा करें।
8. परमेश्वर के देशों पर नियन्त्रण के पाठ में दिए उदाहरणों पर चर्चा करें। क्या आप बाइबल के और उदाहरणों पर विचार कर सकते हैं?
9. ''हमारे जीतने'' का चौथा कारण क्या है?
10. यह तथ्य कि यीशु ''प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा'' है (17:14) व्यक्तिगत रूप से आपको कैसे प्रभावित कर सकता है?
11. पाठ में पांचवां कारण क्या दिया गया है?
12. ''बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासी'' शब्दों के अर्थ पर चर्चा करें। इनमें से *आप पर* कौन सा शब्द लागू होता है? यदि नहीं होता तो आपको क्या करना चाहिए?